



कविवर पंडित दानतरायजी कृत श्री निर्वाणक्षेत्र पूजन





(सोरठा)

परम पूज्य चौबीस, जिहँ जिहँ थानक शिव गये ।
सिद्धभूमि निश-दीस, मन-वच-तन पूजा करौं ॥



ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्राणि !
अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् ।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्राणि !
अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्राणि !
अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् ।



शुचि क्षीरदधि-समनीर निरमल, कनकझारी में भरौं।
संसार पार उतार स्वामी, जोर कर विनती करौं॥
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलास कों।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवास कों॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो
जलं निर्वपामीति स्वाहा ।



केशर कपूर सुगन्ध चन्दन, सलिल शीतल विस्तरौ ।
भव-ताप कौ सन्ताप मेटो, जोर कर विनती करौ ॥
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलास कों ।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवास कों ॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः
चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।





मोती-समान अखण्ड तन्दुल, अमल आनन्द धरि तरौं ।
औगुन-हरौ गुन करौ हमको, जोर कर विनती करौं ॥
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलास कों ।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवास कों ॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।



शुभ फूल-रास सुवास-वासित, खेद सब मन के हराँ ।
दुख-धाम काम विनाश मेरो, जोर कर विनती करौं ॥
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलास कोँ ।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवास कोँ ॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।



नेवज अनेक प्रकार जोग मनोग धरि भय परिहरौं ।
यह भूख-दूखन टार प्रभुजी, जोर कर विनती करौं ॥
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलास कों ।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवास कों ॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



दीपक-प्रकाश उजास उज्ज्वल, तिमिरसेती नहिं डरौं ।
संशय-विमोह-विभरम-तमहर, जोर कर विनती करौं ॥
सम्मदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलास कों ।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवास कों ॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो
दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।



शुभ-धूप परम-अनूप पावन, भाव पावन आचरौं ।
सब करम पुंज जलाय दीज्यो, जोर-कर विनती करौं ॥
सम्मदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलास कों ।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवास कों ॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो
धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।



बहु फल मँगाय चढ़ाय उत्तम, चार गतियों निरवरोँ ।
निहचैँ मुक्ति-फल-देहु मोको, जोर कर विनती करौँ ॥
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलास कोँ ।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवास कोँ ॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः
फलं निर्वपामीति स्वाहा ।



जल गन्ध अच्छत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं ।
'द्यानत' करो निरभय जगतसों, जोर कर विनती करौं ॥
सम्मदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलास कों ।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवास कों ॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।





जयमाला

(सोरठा)

श्री चौबीस जिनेश, गिरि कैलाशादिक नमों ।
तीरथ महा प्रदेश, महा पुरुष निरवाण तैं ॥



(चौपाई 16 मात्रा)

नमों ऋषभ कैलासपहारं,
नेमिनाथ गिरनार निहारं ।
वासुपूज्य चम्पापुर वन्दौं,
सन्मति पावापुर अभिनन्दौं ॥





वन्दौं अजित अजित-पद-दाता,
वन्दौं सम्भव भव-दुःख घाता ।
वन्दौं अभिनन्दन गण-नायक,
वन्दौं सुमति सुमति के दायक ॥





वन्दौं पद्म मुकति-पद्माकर,
वन्दौं सुपास आश-पासहर ।
वन्दौं चन्द्रप्रभ प्रभु चन्दा,
वन्दौं सुविधि सुविधि-निधिकंदा ॥



वन्दौं शीतल अघ-तप-शीतल,
वन्दौं श्रेयांस श्रेयांस महीतल ।
वन्दौं विमल-विमल उपयोगी,
वन्दौं अनंत अनंत सुखभोगी ॥



वन्दौ धर्म-धर्म विस्तारा,
वन्दौ शान्ति, शान्ति मनधारा ।
वन्दौ कुन्थु, कुन्थु रखवालं,
वन्दौ अर अरि हर गुणमालं ॥



वन्दौं मल्लि काम मल चूरन,
वन्दौं मुनिसुव्रत व्रत पूरन ।
वन्दौं नमि जिन नमित सुरासुर,
वन्दौं पार्श्व-पास भ्रम जगहर ॥



बीसों सिद्धभूमि जा ऊपर,
शिखर सम्मेद महागिरि भू पर ।
एक बार वन्दै जो कोई,
ताहि नरक पशुगति नहिं होई ॥



नरपति नृप सुर शक्र कहावै,
तिहुँ जग भोग भोगि शिव पावै ।
विघन विनाशन मंगलकारी,
गुण-विलास वन्दौं भवतारी ॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो
अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूरार्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।





(घत्ता)

जो तीरथ जावै, पाप मिटावै,
ध्यावै गावै, भगति करै ।
ताको जस कहिये, संपति लहिये,
गिरि के गुण को बुध उचरै ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)